International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 139-143

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 139-143
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 27-09-2018
Accepted: 28-10-2018

रीता कुमारी
संस्कृत–शोध छात्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence
रीता कुमारी
संस्कृत–शोध छात्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आधुनिक कृष्ण चरित्र परक काव्यों में सामाजिक चेतना

रीता कुमारी

प्रस्तावना

यह तथ्य सर्वथा सत्य एवं समीचीन है कि किसी समाज की संतुलित एवं सामंजस्यपूर्ण काव्यत्व शक्ति ही उसके सम्पूर्ण फलमूलक एवं उपादेय ज्ञान विज्ञान के विकास एवं प्रचार की सशक्त माध्यम बनती है। अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों के अनुशीलन से जो ज्ञान राशि प्राप्त होती है, उससे विश्व में प्रकाशित भारतीय संस्कृति की मूलभूत सामाजिक मान्यताओं पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। संस्कृत कवियों ने वैदिक काल से ही सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक एवं धार्मिक सभी क्षेत्रों में अपने काव्यों के माध्यम से सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् को स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने भी अपने कृष्ण चरित्र परक संस्कृत काव्यों में कथानकों के साथ–साथ सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं दार्शनिक तथ्यों का उद्घाटन करते हुए उसी सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् के शाश्वत सत्य से परिचित कराने का स्तुत्य प्रयास किया है।

सामाजिक दृश्टि से यदि अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों पर विचार किया जाये तो हम देखते हैं कि काव्य जगत में सामाजिक जीवन मूल्यों और उनसे सम्बद्ध आदर्शों का प्रतिपादन करने की प्रत्येक कवि में स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। सामाजिक आदर्श काव्यों में पल्लवित होकर शास्त्रीय विधियों अथवा कानूनी धाराओं के रूप में निबद्ध कर दिये जाते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी राष्ट्र के मानव जीवन तथा जीवन मूल्यों का अध्ययन काव्यों से ही सम्भव है।

अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों के गहन अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि इन काव्यों में सामाजिक चेतना आद्योपान्त जीवन्त रूप में दिखाई देती है। संक्षेप में इन काव्यों में वर्णित सामाजिक चेतना का निरूपण इस प्रकार किया जा सकता है।

वर्ण व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज में वैदिक काल से ही समाज का विशिष्ट आदर्श रही है। ऋग्वेद के पुरूष सूक्त का 12वां मन्त्र इस तथ्य का सुस्पष्ट प्रतिपादन करता है कि वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था का आदर्श स्वरूप पूर्ण विकसित हो चुका था तथा ब्राह्मणों को समाज का शिरस्थानीय, क्षत्रियों को भुजारूप, वैश्यों को जंघा स्वरूप, और शूद्रों को पैरों के रूप में समाज में स्थान मिला हुआ था।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहु राजन्यः कृतः।
उरूतदस्ययद्वैष्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत्।। [1]

वेदों के पश्चात् स्मृतियों, धर्मशास्त्रों, पुराणों तथा रामायण–महाभारत आदि लौकिक संस्कृत साहित्य के आदिम महाकाव्यों में वर्ण व्यवस्था का सुस्पष्ट प्रतिपादन भारतीय सामाजिक वर्ण व्यवस्था के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करने वाला है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों को मैने ही उत्पन्न किया है। [2]

ब्राह्मण

भारतीय समाज में वैदिक काल से ही ब्राह्मण समाज के सर्वोच्च वर्ण के रूप में सम्मानित रहे हैं। [3] अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव पर ब्राह्मणों की पूजा एवं सम्मान का वर्णन किया गया है। नन्दजी पुत्र उत्पन्न होने पर ब्राह्मणों के दर्शनों के लिए तीव्र उत्कण्ठा से युक्त दिखाई देते हैं। ब्राह्मणों के उपस्थित होने पर वे सिर झुकाकर प्रणाम करते हैं। ब्राह्मणों के स्वस्ति वाचन के पश्चात् नन्दजी की श्रद्धा एवं सम्मान भावना सर्वथा दर्शनीय है।

वे श्रद्धा से युक्त होकर उन्हें नाना प्रकार के धन, वस्त्र, आभूषण, दो लाख गायें, सात पर्वतों के समान तिल के ढेर, रत्न और सुवर्ण दान में देते हैं।[4] नन्दजी ब्राह्मणों का सम्मान करते हुए कहे हैं –

''नन्दोऽपि वेदज्ञान–दैवज्ञान च ब्राह्मणान् आगतान्
विलोक्यानन्दपूर्णेक्षणः आसनानि ददौ तत्र तान्
संस्थाप्याह भो! अपत्यमंगलानि श्रावयन्तु।
इति समुच्चार्य नन्दः वस्त्राणि–रत्नानि–आभूषणानि च समर्पयामास।।''[5]

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में ब्राह्मणों का सदैव आदर एवं पूजा की। रूक्मिणीहरणम् महाकाव्य में रूक्मिणी द्वारा सन्देश लेकर ब्राह्मण के श्रीकृष्ण के पास पहुँचने पर भगवान श्रीकृष्ण ब्राह्मण का अत्यधिक स्वागत करते हुए कहते हैं–

न जातु सौभाग्य समृद्धिमन्तरा द्विजोत्तमानां सहसा समागमः।
कृतोऽद्यतन्मे तव दर्शनाग्निना क्षणेन सर्वदुरितुं तृणीकृतम्। [6]

क्षत्रिय

भारतीय संस्कृति में ब्राह्मणों के पश्चात् द्वितीय स्थान क्षत्रियों को दिया गया है। प्रजा की रक्षा करना क्षत्रियों का प्रमुख कर्तव्य माना गया है। अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में क्षत्रिय राजा के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह उत्तम राजा है, जो विदेह के समान तटस्थ रहकर राज्य करता है। जो शासक होकर भी अपने आचरण से लोगों का अनुशासक बनता है।[7] इसके अतिरिक्त इन काव्यों में क्षत्रिय राजाओं के वीरोचित गुणों का स्थान–स्थान पर प्रस्तुतीकरण किया गया है।

वैश्य

वैश्य वर्ण भारतीय संस्कृति में समाज का आर्थिक परिपालन करने वाला वर्ण कहा गया है। वैश्यों का अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में विस्तृत विवेचन देखने को मिलता है। नन्दजी स्वयं देवमीढ की वैश्या पत्नी से उत्पन्न होने के कारण वैश्योचित गुणों से युक्त थे।[8] तभी तो राधा श्रीकृष्ण से कहती है कि गोपालन, खेती और वाणिज्य कर्म यही हम लोगों के लिए हितकर शुभ वैश्यवृत्ति है। ब्रजवासी यदि यह सब न करें तो उनकी जीविकावृत्ति ही विनष्ट हो जायेगी। [9]

शूद्र

शूद्र भारतीय संस्कृति में समाज की सेवा करने वाला चतुर्थ वर्ण माना गया है। अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में शूद्र वर्ण के अधिक वर्णन देखने को नहीं मिलते हैं। शूद्रों की दिनचर्या तथा सेवावृत्ति इन काव्यों में अप्रत्यक्ष रूप में वर्णित है तथा अर्वाचीन संस्कृत काव्यों में शूद्रों के साथ सद्व्यवहार के भी वर्णन पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए रूक्मिणीहरणम् में कहा गया है।

अमुं स्पृषेमं न विशेषत्सुपर्वणां द्विज प्रवेष्याऽयतनानि नापरः
अमुष्य पेयं न पयोऽस्य पीयतामितीदृषी वो रूचिरा व्यवस्थितिः।।[10]

आश्रम व्यवस्था

आश्रम व्यवस्था वैदिक काल से चली आयी भारतीय संस्कृति की परम महत्वपूर्ण व्यवस्था रही है। भारतीय मनीषियों ने मनुष्य की सम्पूर्ण आयु 100 वर्ष मानकर उसे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चार आश्रमों में विभाजित किया है। इनमें सभी आश्रमों के विशिष्ट उद्देश्यों को बतलाते हुए अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने कहा है कि विद्याभ्यासार्थ ब्रह्मचर्याश्रम का, सभी के पालनार्थ गृहस्थाश्रम का, इन्द्रिय दमन के लिए वानप्रस्थ तथा मोक्ष के लिए संन्यास आश्रम का सेवन करना चाहिये –

विद्यार्थं ब्रह्मचारी स्यात् सर्वेषां पालने गृही।
वानप्रस्थ सन्दमने संन्यासी मोक्ष साधने।।[12]

अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में भारतीय सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को प्रस्तुत करते हुए इन आश्रमों का स्थान–स्थान पर प्रस्तुतीकरण किया है। संक्षेप में अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में इन आश्रमों का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

ब्रह्मचर्याश्रम

ब्रह्मचर्याश्रम में विद्याध्ययन का सर्वोपरि महत्व है। इस आश्रम के नैतिक नियमों का पालन करते हुए मानव अपने जीवन की ऐसी आधार शिला रखता है, जिस पर भावी जीवन का भव्य प्रासाद खड़ा होता है। अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में कहा है कि सन्दीपनि गुरू के आश्रम में रहकर श्रीकृष्ण एवं बलराम का शिक्षा ग्रहण तत्कालीन ब्रह्मचर्याश्रम के विशिष्ट आदर्श को प्रस्तुत करने वाला है।13 इन काव्यों में विद्यमान वर्णनों से स्पष्ट होता है कि उस काल में गुरूओं के आश्रमों में वेदादि शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी तथा विषय में पारंगत आचार्य रहा करते थे।14 वे आचार्य ही गुरूकुल की भोजन एवं शिक्षा का प्रबन्ध किया करते थे। गुरूकुलों में मुख्य रूप से वेदशास्त्रों, कलाओं, नीति तथा अन्य विविध विषयों की शिक्षा दी जाती थी। श्रीकृष्ण एवं बलराम ने सान्दीपनि के आश्रम में सम्पूर्ण शिक्षायें प्राप्त की थीं–

वेदांष्च शास्त्राणि कलाष्च नीतिम्
अस्त्राण्यधीत्यातिमुदा प्रदाय।
गुरूं प्रसन्नं प्रति दक्षिणां स्वा
मिष्ठां तदानीं पुरमागतौ तौ।।[15]

ब्रह्मचर्याश्रम में गुरूकुल की स्थिति श्रीकृष्ण कालीन शिक्षा केन्द्रों की उच्चतम व्यवस्था की सूचक है। छात्रों के ठहरने के लिए उच्चतम व्यवस्था के साथ–साथ छात्र एवं गुरू का पिता–पुत्रवत् व्यवहार उन्हें विशिष्ट जीवन के आदर्शों को सिखाता था। ये गुरूकुल नगर से बाहर रमणीय वातावरण में विद्यमान थे। उनमें प्राकृतिक शोभा सर्वत्र दिखाई देती थी। छात्रों के खेलने के लिए विशाल क्षेत्र हुआ करता था तथा फल एवं फूलों से समृद्धिशाली वृक्ष मन को अतीव आनन्दित करने वाले होते थे। छात्रों एवं अध्यापकों के अतिरिक्त इन आश्रमों में अनेक तपस्वी महात्मा भी तपस्यालीन रहा करते थे। कमलों से हरे–भरे तालाब तथा समीप में बहने वाली नदियों के जल आश्रमों की शोभा बढ़ाया करते थे। गायें दूध से सबको आनन्दित किया करती थीं तथा हिरण, तोता ओर कोयल आदि पक्षी आश्रम की मनोज्ञता के सूचक हुआ करते थे।[16]

गृहस्थाश्रम

भारतीय संस्कृति में गृहस्थाश्रम सबसे महत्वपूर्ण आश्रम माना गया है। प्राचीनकाल में अन्य तीनों आश्रम इसी आश्रम पर आधारित रहा करते थे। मनुस्मृति में कहा गया है कि जिस प्रकार प्राण वायु का आश्रय लेकर सभी प्राणी जीवित रहते हैं, उसी प्रकार गृहस्थाश्रम पर सभी आश्रम आधारित रहा करते हैं।[17] अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में गृहस्थाश्रम की स्थिति को बतलाते हुए कहा गया है कि गृहस्थ की कृतज्ञता सभी जीवों की सेवा में हुआ करती है।[18] गृहस्थ का सर्वस्व परोपकार तथा दूसरों की भलाई में निहित रहा करता है।[19] जो गृहस्थ अपने सुखों को दूसरों को न देकर स्वयं ही भोगते हैं, वे लोकोपकारिणी संस्था का सर्वस्व हड़पने वाले कहे जाते हैं।[20] इसके साथ ही साथ अतिथि सत्कार गृहस्थ का दैव द्वारा प्रदत्त उन्नति का पुरस्कार माना गया है।[21] सन्तानोत्पत्ति गृहस्थाश्रम का सर्वोपरि उद्देष्य हुआ करता है। अर्वाचीन संस्कृत कवियों की मान्यता है कि पुत्र उत्पन्न करके ही मनुष्य पुम् नामक

नरक से उद्धार प्राप्त करता है। अतएव गृहस्थों को विवाह के पश्चात् सन्तान उत्पन्न करके पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

वानप्रस्थ आश्रम

आश्रम व्यवस्था में वानप्रस्थ आश्रम का अपना विशिष्ट महत्व है। भारतीय मनीषियों ने इस आश्रम की महत्ता को बतलाते हुए कहा है कि वन में जो नियम से रहता है एवं जीवन निर्वाह करता है वह वानप्रस्थ है।[22] अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में वानप्रस्थ आश्रम की दृष्टि से यह ज्ञात हुआ है कि इन काव्यों में वानप्रस्थ आश्रम के विशिष्ट वर्णन नहीं पाये जाते श्रीकृष्णचरितामृतम् महाकाव्य में कवि श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे ने मथुरा से ब्रज में आये वानप्रस्थ संन्यासियों का वर्णन किया है। यह वर्णन इस आश्रम की स्थिति का सूचक है।[23]

संन्यास आश्रम

संन्यास आश्रम चारों आश्रमों में चतुर्थ आश्रम माना गया है। यह आश्रम मोक्ष देने वाला कहा गया है। संन्यासी के विशिष्ट आचार को बतलाते हुए स्मृतियों में कहा गया है कि संन्यासी को ग्राम से बाहर वृक्ष के नीचे रहने वाला, वर्षा ऋतु के अतिरिक्त कहीं न टिकने वाला तथा भिक्षा से जीवन निर्वाह करने वाला होना चाहिए।[24]

अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में संन्यास आश्रम के भी यत्र–तत्र वर्णन प्रस्तुत किये हैं। श्रीकृष्णचरितामृतम् में विविध उपासनाओं से मण्डित संन्यासियों को बताया गया है। इन संन्यासियों में कुछ शक्ति के उपासक हैं,25 तो कुछ राम के उपासक हैं।[26] कुछ संन्यासी गणपति विनायक के उपासक दिखाई देते हैं[27] तो कुछ सूर्य के उपासक।28 अन्य संन्यासी विष्णु के उपासक दिखाई देते हैं तथा श्रीकृष्ण को उन्हीं का अवतार बतलाते हैं।[29] इन काव्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उस काल में गुरूओं के आश्रमों में भी अनेक संन्यासी तपस्या में रत दिखाई देते थे।[30]

विविध संस्कार

संस्कारों का वैदिक काल से ही अतीव महत्व रहा है। भारतीय मनीषियों की मान्यता है कि संस्कारों में ही संस्कृत होकर मानव संसार में सफलता को प्राप्त करता हुआ लौकिक उन्नति तथा पारलौकिक निःश्रेयस प्राप्त करता है। सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से व्यक्ति में विलक्षण एवं अवर्णनीय गुण उत्पन्न होते हैं।[31]

अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में संस्कारों के भी यत्र–तत्र वर्णन प्रस्तुत किये हैं। इन संस्कारों में भगवान श्रीकृष्ण के जातकर्म संस्कार का विशिष्ट वर्णन पाया जाता है, जिसमें श्रीकृष्ण के जन्म पर सभी लोग अत्यधिक आनन्दित होकर उत्सव मनाते हैं।[32] नन्दजी के द्वारा वेदज्ञ ब्राह्मणों के द्वारा जातकर्म संस्कार कराया जाता है–

> विषेषतः प्रान्ति पूरयन्ति कामानिति विप्राः तान्तत्रापि
> वेदज्ञान (दैवज्ञान वा) जातकर्मादि वैदिकविधि सम्यग्विदः
> श्रोत्रियान् ''यावतीर्वैदेवताः सर्वास्ता
> वेदविदि ब्राह्मणे बसन्ति 'इतिश्रुतेः।।[33]

श्रीकृष्ण एवं बलराम के नामकरण संस्कार के भी इन काव्यों में वर्णन पाये जाते हैं। अपने दोनों पुत्रों के नामकरण संस्कार कराने के लिए वसुदेव जी गर्गाचार्य से प्रार्थना करते हैं कि वे गोकुल में जाकर अपने प्रिय पुत्रों के नामकरण संस्कार पूर्ण करा दें। वसुदेवजी की प्रार्थना सुनकर गर्गाचार्य गोकुल पहुँचते हैं तथा नन्द जी के यहाँ दोनों पुत्रों के नामकरण संस्कार पूर्ण कराते हैं।[34] गर्गाचार्य रोहिणी कुमार के राम, बल और संकर्षण नाम रखते हैं।[35] नन्दजी के पुत्र का नामकरण करते हुए गर्गाचार्य कहते हैं कि नन्दजी, यह नवीन जलधर के समान श्यामसुन्दर बालक, कृष्ण नाम से आपकी कीर्तिका विस्तार करेगा। इसके गुण प्रख्यात होंगे तथा इस लोक में अपने दया आदि सद्गुणों के द्वारा स्वजनों को आनन्द मग्न करता रहेगा।[36] वे कहते हैं वृजराज पहले कभी यह वसुदेव के गुणों से प्रसन्न होकर वसुदेव–देवकी का पुत्र हुआ था। अतएव लोग इस विख्यात गुणशाली कुमार को उन्हीं के नाम से प्रसन्न करते हुए वासुदेव कहने लगे।[37]

श्रीकृष्ण एवं बलराम के यज्ञोपवीत संस्कार का वर्णन करते हुए अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में कहा गया है कि कंस के वध के पश्चात् पिता वसुदेव ने अपने पुत्रों को गर्गाचार्य के द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न करा कर उन्हें विद्याध्ययन के लिए सान्दीपनि ऋषि के आश्रम में भेजा।[38]

विवाह संस्कार के भी आधुनिक संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में अनेक प्रकार से वर्णन प्रस्तुत किये हैं। इन काव्यों में श्रीकृष्ण के विवाहों के वर्णन प्रचुरता से मिलते हैं। अर्वाचीन कवियों ने श्रीकृष्ण के विवाहों को आधार बनाकर विविध काव्यों का सृजन किया है। विवाह संस्कार में देवकी का विवाह विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें मथुरा के राजा सूरसेन के पुत्र अग्रसेन अपनी भतीजी देवकी का विवाह संस्कार वसुदेव के साथ वेदोक्त विधि से करते हैं तथा दहेज में धन, रत्न, हाथी और रक्षक आदि देकर विदा करते हैं।[39]

संस्कारों में अन्तिम संस्कार अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन श्रीकृष्णचरितामृतम् में पूतना के वध के पश्चात् उसकी अन्त्येष्टि में मिलता है।[40]

अर्वाचीन कृष्णचरित्र परक काव्यों में खान–पान, रहन–सहन, वस्त्र आभूषण एवं प्रसाधन

यह कथन सत्य एवं सर्वमान्य है कि किसी भी समाज का वास्तविक निरूपण उसके तत्कालीन साहित्य में निहित रहता है। प्रत्येक कवि किसी भी काव्य के प्रणयन में सामाजिक स्थिति का प्रतिपादन अवष्यमेव करता हुआ देखा जाता है। सामाजिक आचार– विचार, रीति–रिवाज एवं जीवन पद्धति तत्कालीन कवियों के काव्यों में देखी जाती है, जो स्वाभाविक रूप में कवियों की अन्तष्चेतना में विद्यमान रहकर काव्यों में प्रस्फुटित हुआ करती है।

अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्य यद्यपि कृष्ण कालीन न होकर अर्वाचीन हैं, लेकिन इन कवियों ने अपने काव्यों में प्राचीन काव्यों का अनुसरण किया है, अतः इन काव्यों में पूर्व ग्रन्थों में वर्णित सामाजिक मान्यताओं का प्रतिपादन यथावत होना स्वाभाविक तथ्य है। इसके साथ ही साथ इन कवियों का कार्यकाल अर्वाचीन है, अतः इस काल की सामाजिक मान्यतायें भी इन काव्यों में देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए पारिजातहरण महाकाव्य में वर्णित सामाजिक मान्यतायें कृष्ण कालीन ही हैं, लेकिन कविवर पं0 उमापति शर्मा द्विवेदी ने उन मान्यताओं में कृष्ण कालीन समाज के साथ–साथ अर्वाचीन नवीनताओं को भी प्रस्तुत किया है। संक्षेप में अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में वर्णित खान–पान, रहन–सहन तथा वस्त्राभूषण एवं प्रसाधन का प्रतिपादन इस प्रकार किया जा सकता है।

खान–पान एवं रहन–सहन

अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों के गहन अध्ययनोपरान्त यह ज्ञात हुआ है कि उस काल में मथुरा नगरी ऋद्धियों एवं सिद्धियों से परिपूर्ण तथा असीम वैभव से सुशोभित थी।[41] मथुरा के अतिरिक्त गोकुल, वृन्दावन आदि सम्पूर्ण ब्रज क्षेत्र समृद्धिपूर्ण होकर खान–पान एवं रहन–सहन की उत्कृष्टताओं से मण्डित था।

व्रज क्षेत्र के साथ–साथ भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बसायी गई द्वारका नगरी के वैभव का प्रतिपादन भी आधुनिक कृष्ण चरित्र परक काव्यों में देखने को मिलता है। द्वारका नगरी भगवान श्रीकृष्ण के शासन काल में सम्पूर्ण ऐश्वर्यों से मण्डित होकर त्रिलोक से भी बढ़कर थी।[42]

(क) खान–पान

खान–पान में भारत देश वैदिक काल से ही सम्पूर्ण विश्व में विख्यात रहा है। लेह्य, चोष्य एवं पेय तीन प्रकार के खाद्य पदार्थ भारत देश में सदैव प्रचलित रहे हैं, जो कृष्णकालीन काव्यों में भी पाये जाते हैं[43] गोरस की महिमा भारतीय खान–पान को श्रेष्ठता प्रदान करती आयी है। गोरस से बने पदार्थों को श्रेष्ठ माना जाता रहा है।[44] इन पदार्थों की महिमा का प्रतिपादन गोचारण के लिये प्रस्थान करने के मांगलिक अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण के साथ–साथ उनके साथी गोप बालकों के आस्वादन में देखने को मिलता है।

चर्व्यन्ति चर्व्याणि मृदूनि, लेह्यानि चान्ये चटुला लिहन्ति।
पिबन्ति पेयानि परे प्रहृष्टाश्चोष्यन्ति चोष्यानपरे प्रहृष्टाः।।[45]

दुग्ध भारतवर्ष का सर्वाधिक पौश्टिक पेय रहा हे तथा घृत, मलाई, मक्खन और उनसे बने स्वादिष्ट व्यंजन भारतवासियों की खान–पान पद्धति को श्रेष्ठता प्रदान करने आये हैं। दुग्ध से बने पकवानों को कपूर, और केसर आदि से सुगन्धित बनाकर उपभोग के योग्य बनाया जाता था।

कर्पूर–सारक सुकेषर गन्धःयुक्तै
र्दुग्धाऽन्न–पानक–वरैष्च सदैव तुष्टम्।।[46]

अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में मिष्ठानों का भी स्थान–स्थान पर वर्णन किया है। मिष्ठान्नों में मठरी, कलाकन्द और गुँजा आदि विशेष महत्वपूर्ण माने गये हैं। इनके साथ ही साथ दधि–ओदन–मीठा दूध–लड्डू तथा घृत चूर्ण से बने मिष्ठानों का भी वर्णन किया गया है।

दध्योदनं प्रतिदिनं मधुरं पयष्च
सन्मोदकं सुमधुरं घृतपक्वचूर्णम्।।[47]

इनके अतिरिक्त अन्नकूट और रस की महिमा का भी आधुनिक संस्कृत कवियों ने अपने अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में वर्णन किया है।[48]

(ख) रहन–सहन

रहन–सहन के भी अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में प्रचुर वर्णन मिल जाते हैं। उस काल में सभी लोग सुख एवं शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे तथा राज्य सेवा, राष्ट्र सेवा, ग्राम सेवा, नगर सेवा, व्यक्ति सेवा तथा समाज सेवा, को बिना लोभ के सम्पन्न करके अपने जीवन को कृतार्थ मानते थे।[49] उस काल का रहन–सहन भारत देश के विशिष्ट वैभव का सूचक माना जाता था। भगवान श्रीकृष्ण की द्वारका नगरी रहन–सहन की दृष्टि से इन्द्रपुरी के समान ही महिमा से मण्डित थी। परस्पर भ्रातृत्व एवं बन्धुत्व भाव से मण्डित होकर सम्पूर्ण प्रजाजन द्वारकाधीश श्रीकृष्ण के शासन में स्वर्गीय सुख का अनुभव किया करते थे। द्वारका के निवास का वर्णन करते हुए कहा गया है कि इस पुरी में रहने वाले के लिए आवश्यक नहीं है कि यज्ञादि कार्य एवं उत्कृष्ट उपासना, दानादि सत्कर्म से ही कल्याणमय पुण्योपार्जन करें। यहाँ केवल निवास करने मात्र से ही लौकिक सुखों का उपभोग कर मानव अलौकिक सुख अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति कर लेता है।[50]

(ग) वस्त्र–आभूशण एवं प्रसाधन

अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में वस्त्रों आभूषणों तथा प्रसाधनों के विषय में भी प्रचूर वर्णन प्रस्तुत किये हैं। स्वच्छ एवं अलंकृत वेश–भूषा भारतवर्ष में आदि काल से ही प्रचलित रही हैं। आधुनिक संस्कृत कवियों ने द्वारका नगरी में शिल्पियों द्वारा वस्त्र बनाने का वर्णन करते हुए कहा है कि इस पुरी के उत्कृष्ट कलामर्मज्ञ शिल्पिगण सूत, करघा आदि व्यवहारों और ताने–वाने आदि प्रकार विशेष से विविध वस्त्रों का निर्माण करते हैं।[51]

भारतवासी वैदिक काल से ही आभूषण प्रिय रहे हैं। भारत देश में विभिन्न प्रकार के आभूषणों का प्रचलन रहा है। अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में आभूषणों का वर्णन सर्वत्र ही देखने को मिलता है। स्त्रियों के आभूषणों में कानों में रत्नों के कुण्डल, कण्ठ में हार तथा हाथों में कंगन विशेष आभूषण माने गये हैं।[52] इन आभूषणों का विशेष वर्णन पारिजातहरण महाकाव्य में देखने को मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण के शासन काल में आभूषणों की परम्परा द्वारका नगरी में सर्वत्र दिखाई देती थी।

स्त्रियों के अतिरिक्त पुरूषों के आभूषणों के भी अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में वर्णन देखने को मिलते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के विशिष्ट आभूषणों के वर्णन करते हुए अर्वाचीन संस्कृत कवियों ने मकर के आकार के कुण्डलों का वर्णन किया है, जो ऐसा जान पड़ता है कि जैसे काम का वाहन मकर।[53] नाना प्रकार के रंग बिरंगे रत्नों से मण्डित भगवान का छत्र विशिष्ट आभूषण था।[54] इसके अतिरक्त रत्न जाल से जडित कवच भी भगवान का विशिष्ट आभूषण माना गया है।[55]

अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में स्त्रियों एवं पुरूषों के अतिरिक्त बच्चों के आभूषणों के भी रमणीय वर्णन प्रस्तुत किये गये हैं।

भारत वासी स्त्री एवं पुरूष दोनों ही वैदिक काल से ही प्रसाधन प्रिय रहे हैं। स्त्रियाँ प्रसादन प्रिय होकर अपने प्रियतमों को रिझाने के लिए आदि काल से ही उतावली देखी गयी। अर्वाचीन कृष्ण चरित्र परक काव्यों में स्त्रियों के अंगों पर सुगन्धित प्रदार्थों के लेप का वर्णन पाया जाता है।[56]

समग्र रूप में हम देखते हैं कि आधुनिक संस्कृत कवियों ने अपने कृष्ण चरित्र परक काव्यों में कृष्णकालीन खान–पान, रहन–रहन तथा वस्त्रों, आभूषणों और प्रसाधनों के स्थान–स्थान पर वर्णन प्रस्तुत किये हैं।

संन्दर्भ सूची

1. ऋग्वेद, 10/90/12
2. श्रीमद्भगवद्गीता
3. श्रीकृष्णचरितामृतम्, 12/20
4. वही, 12/21–25
5. नन्दोत्सव, वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, पृ0 71
6. रूक्मिणीहरणम्, काशीनाथ शर्मा द्विवेदी, पृ0 11/21
7. चीरहरणम्, डा0 परमानन्द शास्त्री, 3/27
8. नन्दोत्सव, वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, पृ0 9
9. श्रीकृष्णचरितम्, श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे, 23/45
10. रूक्मिणीहरणम्, काशीनाथ शर्मा, 11/84
11. मनुस्मृति, 6/88, आपस्तम्बधर्म सूत्र, 29/21/2, गौतम सूत्र, 32
12. शुक्रनीति, 4/2
13. श्रीकृष्णचरितम्, डा0 रमेश चन्द्र शुक्ल, 4/16
14. वही, 4/18
15. वही, 4/26
16. वही, 4/19
17. मनुस्मृति, 3/77
18. श्रीकृष्णचरितम्, रमेश चन्द्र शुक्ल, 4/18
19. श्रीकृष्णचरितामृतम्, श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा, 11/115
20. पारिजातहरण, उमापति शर्मा द्विवेदी, 4/114
21. वही, 4/113
22. याज्ञवल्क्यस्मृति, मिताक्षरा पृ0 45
23. श्रीकृष्णचरितामृतम्, श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे, 10
24. याज्ञवल्क्यस्मृति, 58
25. श्रीकृष्णचरितामृतम्, 26/14

26. वही, 26/16
27. वही, 26/15
28. वही, 26/17
29. वही, 26/18
30. श्रीकृष्णचरितम्, 4/22
31. वीरमित्रोदयसंस्कारप्रकाश, भाग 1, पृ0 132
32. श्रीकृष्णचरितम्, 12/87
33. नन्दोत्सव, डा0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, पृ0 45
34. श्रीकृष्णचरितामृतम्, 19/22
35. वही, 19/23, 24
36. वही, 19/26
37. वही, 19/30
38. श्रीकृष्णचरितम्, डा0 रमेश चन्द्र शुक्ल, 4/14
39. श्रीकृष्णचरितामृतम्, 6/8
40. वही, 15/5
41. श्रीकृष्णचरितामृतम्, श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे, 6/2, 3
42. पारिजातहरण, उमापति शर्मा द्विवेदी, 1/3
43. पारिजातहरण, 4/62
44. वही, 4/61
45. व्रजभाषामृत, डा0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, पृ0 13
46. श्री व्रजस्तवमालिका, गोर्वधनगीतिः, 9 डा0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, पृ0 13
47. वही, 10 पृ0 13
48. वही, 11 पृ0 13
49. वही, 14
50. श्रीकृष्णचरितम्, 4/13
51. पारिजातहरण, 1/25
52. श्रीकृष्णचरितामृतम्, 12/40
53. वही, 9/30
54. पारिजातहरण, 4/20, 21
55. वही, 3/24
56. श्रीकृष्णचरितामृतम्, 12/40